# हिन्दी–भाषा साहित्य का इतिहास

## हिन्दी साहित्य द्वितीय प्रश्न पत्र – बी. ए. अंतिम वर्ष

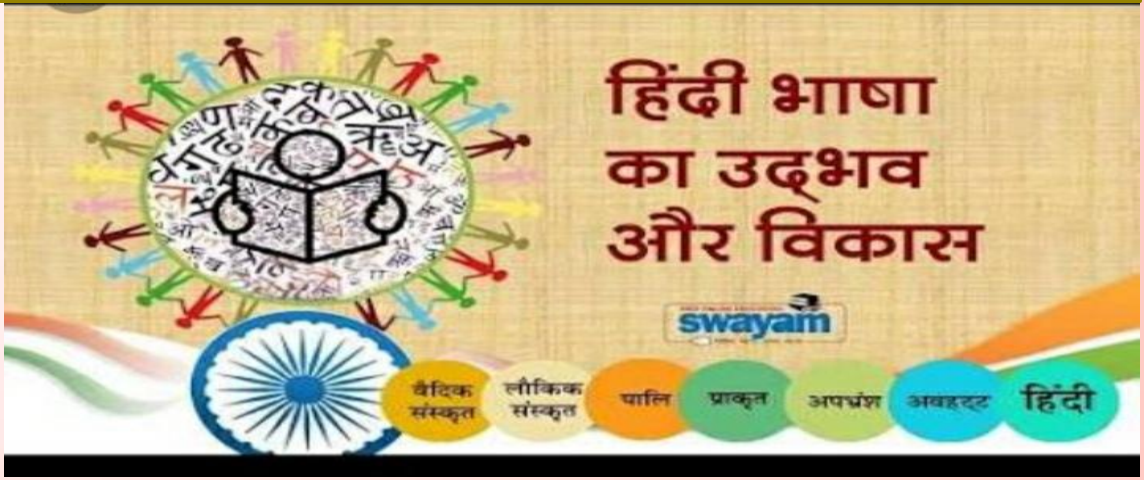


डॉ. प्रवीण कुमार साहू

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव

# हिन्दी की व्युत्पत्ति

- हिन्दी का संबंध 'हिन्द' अथवा 'हिन्दु' या 'सिन्ध' से है।
- प्रयोग और रूप की दृष्टि से हिन्दी शब्द फारसी भाषा का ही है।
- संस्कृत के 'सिन्धु' और 'सिंधी' शब्द फारसी में 'हिन्दु' और 'हिन्दी' हो जाते हैं।
- हिन्दी का एक अर्थ भारत का निवासी भी है।
- प्राचीन ईरानी साहित्य में 'हिन्दु' शब्द का प्रयोग नदी के साथ ही उस तट के निवासियों के लिए भी हुआ। हिन्दु शब्द में 'उ' का लोप हो जाने से 'हिन्द' भूमिवाचक हो गया। कालान्तर में हिन्दी शब्द देश–बोधक रुप में प्रयुक्त होने लगा।
- युनानी शब्द 'ईन्दका' या अंग्रेजी शब्द ' इण्डिया' आदि 'हिन्दीका' के ही विकसित रूप है। इसका मूल अर्थ है 'हिन्दीक'। यह एक विशेषण है जो भाषा के अर्थ में संज्ञा हो गया है।

- हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यज्दी के ‘जफरनामा’ (1424) में मिलता है।
- संस्कृत की ‘इन्द’ धातु से भी हिन्दी की व्युत्पत्ति मानी जाती है।
- मोनियर विलियम्स ‘सिन्धु’ शब्द को ‘सिंध्’ (जाना) धातु से निकला होने का अनुमान लगाते हैं।
- डॉ. भोलानाथ तिवारी ने ‘सिन्धु’ शब्द को द्रविड़ भाषा का माना है। द्रविड़ भाषा परिवार के सिड्, सिंद्, सित् धातु का विकसित रुप मानते हैं। जिसका अर्थ है – सींचना या छिड़कना। ‘सिन्धु’ इसी का विकसित रूप है।

# भाषा के अर्थ में हिन्दी

- भाषा के अर्थ में हिन्दी का प्रयोग संभवतः छठी सदी के आसपास ही विकसित हुआ होगा।
- अरबी साहित्य में प्रयुक्त संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के लिए 'जबाने हिन्दी' का प्रयोग मिलता है।
- भारत में भाषा के लिए हिन्दी शब्द का प्रयोग मुसलमानों की देन है। क्योंकि संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता।
- 'हिन्दी' शब्द अपने विस्तृत अर्थ में हिन्दी प्रदेश में बोली जाने वाली सत्रह बेलियों का द्योतक है।
- आज खड़ी बोली, साहित्यिक, परिनिष्ठित मानक हिन्दी कहते है। भारत की राजभाषा, संचार भाषा व शिक्षा का माध्यम है।

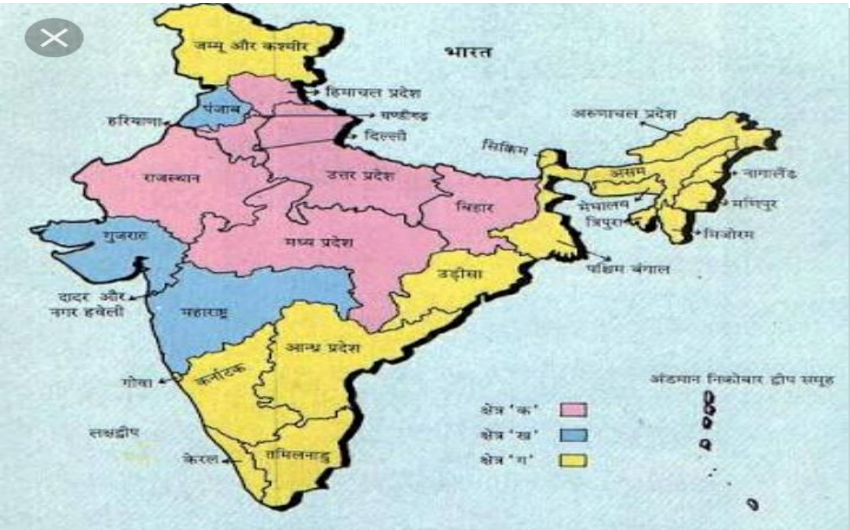

# हिन्दी भाषा का विकास

- हिन्दी का उद्‌भव 100 ई. के आसपास शौरसेनी, अर्धमागधी तथा मागधी अपभ्रंश से हुआ है।
- हिन्दी के कुछ रूप पालि में मिलते हैं, प्राकृत में उनकी संख्या और बढ़ गयी। अपभ्रंश काल ये रूप और बढ़ गये।
- किन्तु हिन्दी भाषा का वास्तविक आरंभ 1000 ई. से माना जाता है।
- भाषा के विकास की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया गया है–

## 'हिन्दी भाषा' का विकास

1. आदिकाल ( 1000 ई. से 1500 ई. तक )
2. मध्यकाल (1501 ई. से 1800 ई. तक)
3. आधुनिक काल (1801से आज तक)

read more...

# हिन्दी भाषा का विकास

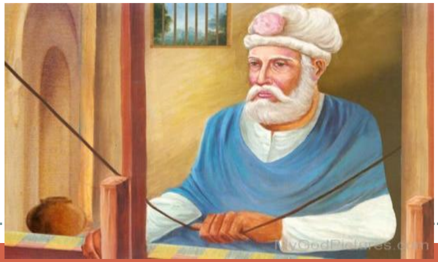

## आदिकाल (1000 ई. से 1500)

- यह हिन्दी का शैशव काल है।
- इस काल की हिन्दी में अपभ्रंश के काफी रूप मिलते हैं।
- शब्द समूह की दृष्टि से आदिकालीन हिन्दी अपभ्रंश से भिन्न नहीं थी। इसे अपभ्रंश हिन्दी भी कह सकते हैं।
- तद्भव शब्दों का प्रयोग बहुतायत
- अरबी फारसी के शब्दों की संख्या कम है।
- डिंगल, मैथिली और दक्खिनी, अवधी, ब्रज तथा मिश्रित रूपों का प्रयोग है।
- गोरखनाथ, विद्यापति, नरपति नाल्ह, चंदबरदायी इस काल के प्रमुख साहित्यकार है। हिन्दी अपने पैरों पर खड़ी हो गई।

## मध्यकाल (1500 ई. से 1800)

- मध्यकाल में हिन्दी में बोलियों के विविध रूप विकसित हा गये।
- हिन्दी भाषा व्याकरण के क्षेत्र में पूरी तरह स्थिर हो गयी।भाषा में संयोगात्मक रूप कम हो गये।
- तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक और देशज और तद्भव शब्दों का कम हुआ।
- दरबारी भाषा फारसी के सैकड़ों शब्द हिन्दी में घुल–मिल गये।
- यूरोप से संपर्क के कारण पुर्तगाली, स्पेनिश, फ्रांसीसी व अंग्रेजी के शब्द भी आ गये।
- साहित्यिक भाषा ब्रजभाषा रही।
- कबीर, तुलसी, सूरदास, मीरा, जायसी, केशव, बिहारी, भूषण, देव, रसखान घनानंद प्रमुख कवि।

# आधुनिक काल (1800 से अब तक)

- ब्रजभाषा का प्रभाव क्षीण होते चला गया।
- साहित्य में खड़ी बोली का आधिपत्य बढ़ता गया ।
- हिन्दी भाषा के प्रचार में ईसाई मिशनरी व फोर्ट विलियम कॉलेज का अहम योगदान व अंग्रेजो के आगमन के कारण खड़ी बोली गद्य का विकास हुआ।
- हिन्दी भाषा के विकास में भारतेंदु व प्रताप नारायण का महती कार्य रहा।
- भाषा को स्थिर रूप देने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी स्तुत्य योगदान।
- भाषा के परिष्कार में मैथिलीशरण गुप्त और छायावादी कवियों का बड़ा हाथ रहा। कुछ अपवादों को छोड़कर हिन्दी का मानक रूप सुनिश्चित हुआ।
- अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के कारण 'ऑ' ध्वनि का हिन्दी में प्रयोग बढ़ा।
- निबंध, नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोतार्ज, महाकाव्य, प्रबंध काव्य व गीत–प्रगीत का विपुल मात्रा में लिखे गये। रामचंद शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, गुलाब राय, पंत, निराला, प्रसाद, महादेवी, अज्ञेय मुक्तिबोध आदि प्रमुख साहित्यकार थे।

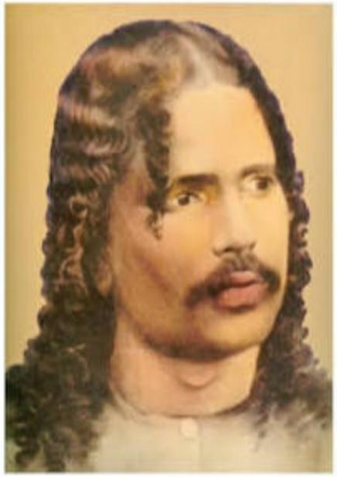

निज भाषा उन्नति अहै, सब
उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के,
मिटत न हिय को सूल।

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब
गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन,
रहत हीन के हीन।

# भारतीय आर्य भाषाएँ–

- आर्यो के आगमन के पूर्व भारत में नेग्रिटो, आस्ट्रिक, किरात एवं द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाएं बोली जाती थी।

- भारतीय आर्य भाषाओं को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया गयाा है–

# प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (1500 ई. पू. से 500 ई. पूर्व तक)

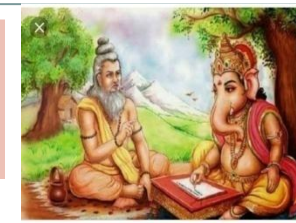

- आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक साहित्य में उपलब्ध होता है।
- वैदिक साहित्य को जनभाषा का साहित्य कहा जाता है।
- वैदिक साहित्य की भाषा वैदिक संस्कृत, वैदिकी, छन्दस एवं प्राचीन संस्कृत नामों से जानी जाती है। इसका प्राचीनतम रूप ऋग्वेद की भाषा में है।
- यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मणग्रंथों, वैदिक संहिताओं, आरण्यकों एवं उपनिषदों में वैदिक भाषा का क्रमशः विकसित रूप मिलता है।
- वैदिक संस्कृत में तीन लिंग, तीन वचन, संबोधन तथा सात विभक्तियों के मिलते हैं।
- उपनिषद काल की समाप्ति तक वैदिक भाषा के रूढ़ हो गई और जनभाषा के साहित्यिक रूप को लौकिक संस्कृत कहा गया।
- ईसा की 5–6वीं शताब्दी के पूर्व पाणिनी ने लौकिक संस्कृत के आदर्श गठन के साथ 'अष्टाध्यायी' में संस्कृत में स्वीकृत भाषाओं में हिन्दी, तमिल, गुजराती, बंगला, मलयालम को स्थान दिया।

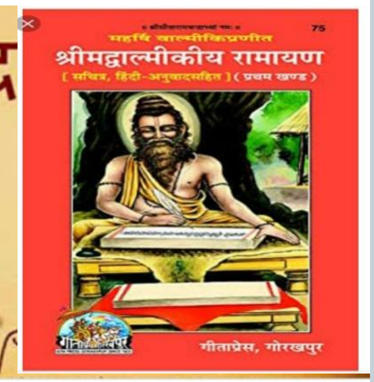

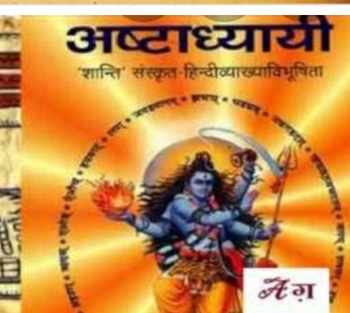

# मध्यकालीन आर्यभाषा (500 ई. पू. से 1000 ईस्वी तक )

- मध्यकालीन आर्य भाषाओं में पालि, प्राकृत, एवं अपभ्रंश आदि भाषाएं आती है।
- पालि (प्रथम प्राकृत) का अर्थ 'बुद्ध वचन' होने से त्रिपिटक ग्रंथों के लिए हुआ है। पालि में ही इनकी रचना हुई है। पालि भारत की प्रथम देश भाषा है।
- पालि में तीन लिंग व दो वचन का प्रयोग हुआ है।
- प्राकृत प्राचीनतम प्रचलित जनभाषा है। नमि साधु के अनुसार इसका अर्थ पहले की बनी हुई जो भाषा मूल से चली आ रही है।
- प्राकृतों की संख्या पांच मानी गई है– शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची और महाराष्ट्री प्राकृत।
- प्राकृत का प्रयोग वररूचि (प्राकृत प्रकाश), हेमचंद्र (प्राकृत व्याकरण), अश्वघोष के नाटक, गुणाढ्य (बृहत्कथा), राजा हाल (गाहा सतसई), प्रवरसेन (रावण वहो ) के साथ ही जैन साहित्य में भी हुआ है।
- 'अपभ्रंश मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की बीच की कड़ी व संन्धिकालीन भाषा है।
- इस शब्द का प्रथम प्रयोग पतंजलि के महाभाष्य में मिलता है।

## मध्यकालीन आर्यभाषा

1. पालि (500 ई.पू. से 1 ई. तक)
2. प्राकृत (1 ई. से 500 ई. तक)
3. अपभ्रंश (500 ई. से 1000 ई. तक)

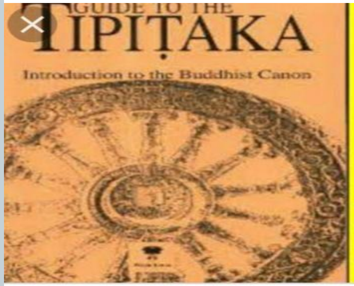


**बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक**

1) विनय पिटक
2) सुत्तपिटक
3) अभिधम्मपिटक

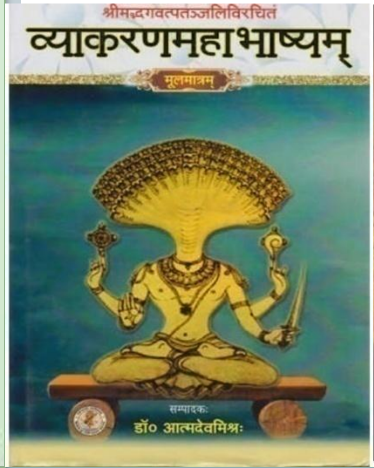


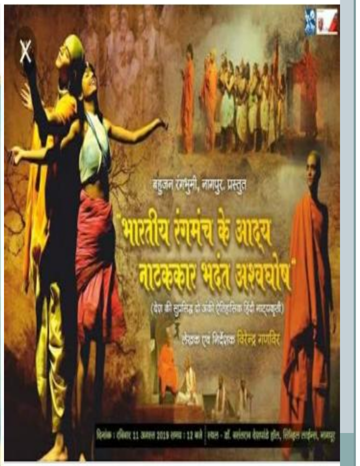

# आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (1000 ईस्वी अब तक तक)

- अपभ्रंश को अवहत्थ या अवहट्ठ भी कहा गया है।
- अपभ्रंश का साहित्यिक रूप छठी शताब्दी में उभर आया। 8–9वीं शताब्दी तक संपूर्ण उत्तर भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हो गयी ।
- अपभ्रंश में 'उ' कार बहुलता की प्रवृत्ति है। इसी से यह प्रवृत्ति आधुनिक काल की ब्रज, अवधी, बुन्देली आदि भाषाओं में पहुँची है।
- अपभ्रंश विस्तार पंजाब, राजस्थान और गुजरात में हुआ था।
- अपभ्रंश साहित्य के रचनाकार अधिकांशतः जैन थे। बौद्ध सिद्धों ने भी अपभ्रंश में रचना की है।
- अपभ्रंश के प्रमुख रचनाकारों में स्वयंभू, पुष्पदंत, धनपाल, कनकामर मुनि जोइन्दु, रामसिंह, उल्लेखनीय है।
- गद्य के टुकड़े उद्योतन सूरि की 'कुवलयमाल' में यत्र– तत्र बिखरें पड़े हैं।

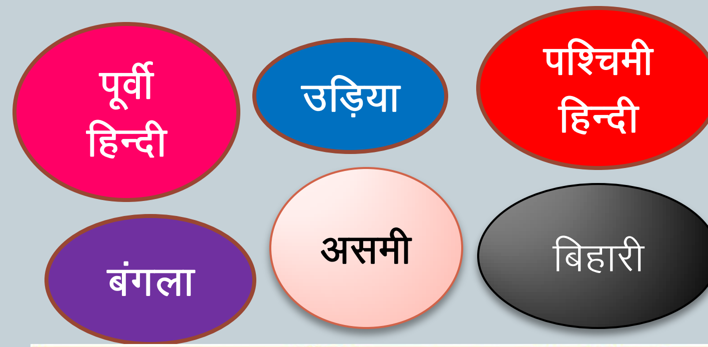

# अपभ्रंशों के विविध रूपों का विकास (आधुनिक आर्यभाषाएं)

| अपभ्रंश | | आधुनिक आर्य भाषाएं |
|---|---|---|
| शौरसेनी | – | पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती |
| अर्धमागधी | – | पूर्वी हिन्दी |
| मागधी | – | बिहारी, बँगला, असमी, उड़िया |
| खस | – | पहाड़ी भाषाएं ( गढ़वाली – कुमायूंनी) |
| ब्राचड़ | – | पंजाबी, लहँदा, सिन्धी |
| महाराष्ट्री | – | मराठी |

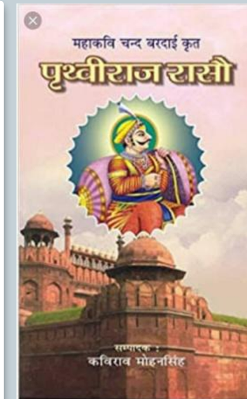


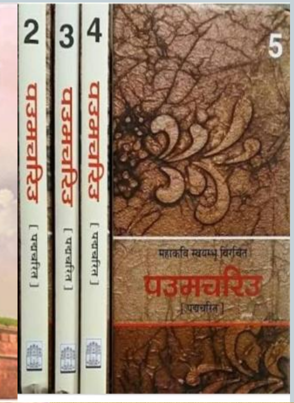

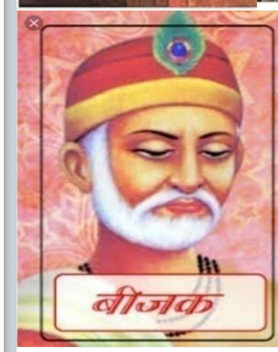


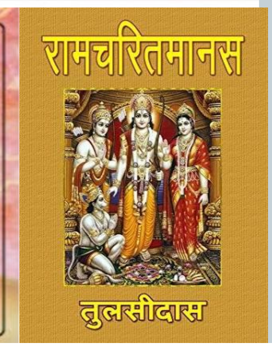


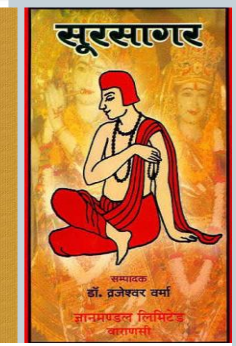

धन्यवाद